बिल्ली का न्याय-पंचतंत्र

एक जंगल में विशाल वृक्ष के तने में एक खोल के अन्दर कपिंजल नाम का तीतर रहता था । एक दिन वह तीतर अपने साथियों के साथ बहुत दूर के खेत में धान की नई-नई कोंपलें खाने चला गया। बहुत रात बीतने के बाद उस वृक्ष के खाली पडे खोल में 'शीघ्रगो' नाम का खरगोश घुस आया और वहीं रहने रहने लगा।

कुछ दिन बाद कपिंजल तीतर अचानक ही आ गया । धान की नई-नई कोंपले खाने के बाद वह खूब मोटा-ताजा हो गया था । अपनी खोल में आने पर उसने देखा कि वहाँ एक खरगोश बैठा है । उसने खरगोश को अपनी जगह खाली करने को कहा ।

खरगोश भी तीखे स्वभाव का था; बोला ----"यह घर अब तेरा नहीं है । वापी, कूप, तालाब और वृक्ष के घरों का यही नियम है कि जो भी उनमें बसेरा करले उसका ही वह घर हो जाता है । घर का स्वामित्व केवल मनुष्यों के लिये होता है , पक्षियों के लिये गृहस्वामित्व का कोई विधान नहीं है ।"

झगडा बढता गया । अन्त में, कर्पिजल ने किसी भी तीसरे पंच से इसका निर्णय करने की बात कही । उनकी लडाई और समझौते की बातचीत को एक जंगली बिल्ली सुन रही थी। उसने सोचा, मैं ही पंच बन जाऊँ तो कितना अच्छा है; दोनों को मार कर खाने का अवसर मिल जायगा ।

यह सोच हाथ में माला लेकर सूर्य की ओर मुख कर के नदी के किनारे कुशासन बिछाकर वह आँखें मूंद बैठ गयी और धर्म का उपदेश करने लगी। उसके धर्मोपदेश को सुनकर खरगोश ने कहा---"यह देखो ! कोई तपस्वी बैठा है, इसी को पंच बनाकर पूछ लें।" तीतर बिल्ली को देखकर डर गया; दूर से बोला----"मुनिवर ! तुम हमारे झगडे का निपटारा कर दो । जिसका पक्ष धर्म-विरुद्ध होगा उसे तुम खा लेना ।"

यह सुन बिल्ली ने आँख खोली और कहा--- "राम-राम ! ऐसा न कहो । मैंने हिंसा का नारकीय मार्ग छोड दिया है । अतः मैं धर्म-विरोधी पक्ष की भी हिंसा नहीं करुँगी । हाँ, तुम्हारा निर्णय करना मुझे स्वीकार है । किन्तु, मैं वृद्ध हूँ; दूर से तुम्हारी बात नहीं सुन सकती, पास आकर अपनी बात कहो ।"

बिल्ली की बात पर दोनों को विश्वास हो गया; दोनों ने उसे पंच मान लिया, और उसके पास आ गये । उसने भी झपट्टा मारकर दोनों को एक साथ ही पंजों में दबोच लिया ।

अनुवाद - कुलदीप धर

गिल्ली का नृाय-पंमउंड्

एक एंगल में विमाल वृक्ष के उने में एक पिल के म्रनुर कपिंएल नाभ का डीउर रहउा षा। एक मिन वह डीउर म्रपने भाषियें के भाष रहउ ग्रुर के पिउ में णान की नरं-नरं केंपलें पाने मला गया।

रहउ राउ गीउने के राम उभ वृक्ष के पाली परे पिल में 'मीघ्रगे' नाभ का पिरगोम ष्मुभ म्रया ठौर वहीं रहने रहने लगा।
कुछ मिन राम कपिंएल डीउर म्रमान्नक ही म्रु गया। णान की नरं-नरं केंपलें पाने के राम वह पुर भेए-उाए हे गया षा। म्रपनी पिल में म्रुने पर उभने मेपा कि वहाँ एक पिरगोम रैठा है। उभने पिरगोम के म्रपनी एगह पाली करने के कहा।

पिरगोम ही डीपि भ्वहाव का षा; गेला ----"यह ष्मर म्रग डेरा नहीं है। वापी, कुप, उालाग ठौर वृक्ष के ष्मरें का यही नियभ है कि एे ही उनमें गमेरा करले उभका ही वह ष्मर हे एउा है। ष्मर का भ्वाभिक्व केवल भनुष्यें के लिये हेउा है, पक्षियें के लिये गृहभ्वाभिक्व का कोरं विणान नहीं है।"

एगहा गम्ढउा गया। म्रनु में, कपिंएल ने किभी ही डीभरे पंम मे उभका निल्य करने की राउ कही। उनकी लहारं ठौर भभाएंडु की राउमीउ के एक एंगली गिल्ली भुन रही षी। उभने भेमा, मैं ही पंम गन एउं उे किउना म्रम्छा है; मेनें के भार कर पाने का म्रवभर मिल एयगा।

यह सोच हाथ में माला लेकर सूर्य की ओर मुख कर के नदी के किनारे कुशासन बिछाकर वह आँखें मूंद बैठ गयी और धर्म का उपदेश करने लगी। उसके धर्मोपदेश को सुनकर खरगोश ने कहा---"यह देखो ! कोई तपस्वी बैठा है, इसी को पंच बनाकर पूछ लें।"

तीतर बिल्ली को देखकर डर गया; दूर से बोला----"मुनिवर ! तुम हमारे झगड़े का निपटारा कर दें। जिसका पक्ष धर्म-विरुद्ध होगा उसे तुम खा लेना।"

यह सुन बिल्ली ने आँख खोली और कहा--- "राम-राम ! हिंसा न कहो। मैंने हिंसा का नारकीय मार्ग छोड़ दिया है। अतः मैं धर्म-विरोधी पक्ष की भी हिंसा नहीं करूँगी। हाँ, तुम्हारा निर्णय करना मुझे स्वीकार है। किन्तु, मैं वृद्ध हूँ; दूर से तुम्हारी बात नहीं सुन सकती, पास आकर अपनी बात कहो।"

बिल्ली की बात पर दोनों को विश्वास हो गया; दोनों ने उसे पंच मान लिया, और उसके पास आ गये। उसने भी झपट मारकर दोनों को एक साथ ही पंजों में दबोच लिया।

अनुवाद - कुलदीप धर